**Durga Chalisa Lyrics - दुर्गा चालीसा लिरिक्स,नमो नमो दुर्गे सुख करनी नमो नमो अंबे दुःख हरनी।**

**।। दोहा।।**

**या देवी सर्वभूतेषु शक्तिरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै, नमस्तस्यै नमो नमः।।**

**।। चौपाई।।**

**नमो नमो दुर्गे सुख करनी।
नमो नमो अंबे दुःख हरनी।।
निराकार है ज्योति तुम्हारी ।
तिहूं लोक फैली उजियारी।।**

**शशि ललाट मुख महा विशाला।
 नेत्र लाल भृकुटी विकराला ।।
रूप मातुको अधिक सुहावे।
 दरश करत जन अति सुख पावे ।।**

**तुम संसार शक्ति मय कीना ।
 पालन हेतु अन्न धन दीना ।।
अन्नपूरना हुई जग पाला ।
तुम ही आदि सुंदरी बाला ।।**

**प्रलयकाल सब नासन हारी।
 तुम गौरी शिव शंकर प्यारी ।।
शिव योगी तुम्हरे गुण गावैं।
 ब्रह्मा विष्णु तुम्हें नित ध्यावै।।**

**रूप सरस्वती को तुम धारा ।
 दे सुबुद्धि ऋषि मुनिन उबारा।।
धरा रूप नरसिंह को अम्बा ।
 परगट भई फाड़कर खम्बा ।।**

**रक्षा करि प्रहलाद बचायो ।
हिरणाकुश को स्वर्ग पठायो ।।
लक्ष्मी रूप धरो जग माही।
 श्री नारायण अंग समाहीं । ।**

**क्षीरसिंधु मे करत विलासा ।
 दयासिंधु दीजै मन आसा ।।
हिंगलाज मे तुम्हीं भवानी।
 महिमा अमित न जात बखानी ।।**

**मातंगी धूमावति माता।
 भुवनेश्वरी बगला सुख दाता ।।
श्री भैरव तारा जग तारिणी।
 क्षिन्न भाल भव दुःख निवारिणी ।।**

**केहरि वाहन सोहे भवानी।
 लांगुर वीर चलत अगवानी ।।
 कर मे खप्पर खड्ग विराजै ।
 जाको देख काल डर भाजै ।।**

**सोहे अस्त्र और त्रिशूला।
 जाते उठत शत्रु हिय शूला ।।
नगर कोटि मे तुमही विराजत।
 तिहुं लोक में डंका बाजत ।।**

**शुंभ निशुंभ दानव तुम मारे।
 रक्तबीज शंखन संहारे ।।
महिषासुर नृप अति अभिमानी।
 जेहि अधिभार मही अकुलानी ।।**

**रूप कराल काली को धारा।
 सेन सहित तुम तिहि संहारा।।
परी गाढ़ संतन पर जब-जब।
 भई सहाय मात तुम तब-तब ।।**

**अमरपुरी औरों सब लोका।
 जब महिमा सब रहे अशोका ।।
ज्वाला में है ज्योति तुम्हारी।
 तुम्हे सदा पूजें नर नारी ।।**

**प्रेम भक्त से जो जस गावैं।
 दुःख दारिद्र निकट नहिं आवै ।।
 ध्यावें जो नर मन लाई ।
 जन्म मरण ताको छुटि जाई ।।**

**जोगी सुर मुनि कहत पुकारी।
योग नही बिन शक्ति तुम्हारी ।।
शंकर आचारज तप कीन्हों ।
 काम क्रोध जीति सब लीनों ।।**

**निसदिन ध्यान धरो शंकर को।
 काहु काल नहिं सुमिरो तुमको।।
शक्ति रूप को मरम न पायो ।
शक्ति गई तब मन पछितायो।।**

**शरणागत हुई कीर्ति बखानी।
 जय जय जय जगदम्ब भवानी ।।
भई प्रसन्न आदि जगदम्बा ।
 दई शक्ति नहि कीन्ह विलंबा ।।**

**मोको मातु कष्ट अति घेरों ।
 तुम बिन कौन हरे दुःख मेरो ।।
आशा तृष्णा निपट सतावै।
 रिपु मूरख मोहि अति डरपावै ।।**

**शत्रु नाश कीजै महारानी।
 सुमिरौं एकचित तुम्हें भवानी ।।
करो कृपा हे मातु दयाला।
 ऋद्धि-सिद्धि दे करहु निहाला ।।**

**जब लगि जियौं दया फल पाऊं।
 तुम्हरौ जस मै सदा सुनाऊं ।।
दुर्गा चालीसा जो गावै ।
 सब सुख भोग परम पद पावै।।**

**देवीदास शरण निज जानी।
करहु कृपा जगदम्ब भवानी ।।**

**।। दोहा।।**

**शरणागत रक्षा कर, भक्त रहे निःशंक ।
मैं आया तेरी शरण में, मातु लीजिए अंक।।**

**allbhajan.com**